

प्रेम भगति प्रकाशी (१४)

नींह नगर के साईं निवासी ।

साकेत सहिचरि अवनी अवतरी प्रेम भगति प्रकाशी

दीन दशा लखि दीन जननि की उर उपजी करूणाराशी ॥१॥

पतितनि पावन करण हेतु प्रभु दरशयो पथ दासी

नाम धियायो हरि गुण गायो करियो महल खवासी ॥२॥

कपट कामना दूरि बहावो होइये अनन्य उपासी

नातो नेहु नाथ सो करके कटिए जम की फांसी ॥३॥

मिलि सजनी प्रिय करंहि प्रहरी हो केवल प्रेमप्यासी

यह रस रीत लखाई लालन हियं हरि भगति हुलासी ॥४॥

साईं अमड़ि सौभाग्य सुहग सुख अजर अमर अविनाशी

बलहारी चेरी तव चरणनि दियो दरसु सुखराशी ॥५॥